

गणतंत्र दिवस समारोह में राजपथ पर 'कला कुंभ' होंगे खास आकर्षण



अनूठी पहल 'कला कुंभ' के तहत बनाए गए विशाल और शानदार स्कॉल अब गणतंत्र दिवस 2022 समारोह के लिए राजपथ पर स्थापित किए गए हैं। स्कॉल राजपथ के दोनों ओर सुशोभित हैं जो विस्मयकारी दृश्य प्रस्तुत करते हैं। सचिव, संस्कृति, श्री गोविंद मोहन ने आज राजपथ का दौरा किया और प्रतिष्ठानों का निरीक्षण किया।

ये स्कॉल देश के विविध भौगोलिक स्थानों से कला के विभिन्न रूपों के साथ राष्ट्रीय गौरव और उत्कृष्टता को व्यक्त करने के साधन के रूप में कला की क्षमता का विश्लेषण करते हैं। ओडिशा और चंडीगढ़ में दो स्थानों पर विशेष कार्यशालाओं या 'कला कुंभ' में भाग लेने वाले 500 से अधिक कलाकारों द्वारा इन पर परिश्रमपूर्वक शोध किया गया और उत्साहपूर्वक चित्रित किया गया।

मीडियाकर्मियों को जानकारी देते हुए, श्री गोविंद मोहन ने कहा कि हम आजादी का अमृत महोत्सव मना रहे हैं और 750 मीटर लंबा स्कॉल संस्कृति मंत्रालय और रक्षा मंत्रालय की एक अनूठी पहल है। उन्होंने कहा कि शानदार स्कॉल को विभिन्न क्षेत्रों के स्थानीय कलाकारों द्वारा चित्रित किया गया है और बड़े पैमाने पर स्वतंत्रता संग्राम के गुमनाम नायकों की वीरता की कहानियों को चित्रित किया गया है। सचिव ने समझाया कि इन कलाकारों के विविध कला रूप भी स्कॉल में परिलक्षित होते हैं जिन्हें एक भारत श्रेष्ठ भारत की सच्ची भावना में एक मंच पर एक साथ लाया गया है। श्री गोविंद मोहन ने आगे कहा कि गणतंत्र दिवस के बाद, स्कॉल को देश के विभिन्न हिस्सों में ले जाया जाएगा और वहां आजादी के अमृत महोत्सव के हिस्से के रूप में प्रदर्शित किया जाएगा।

संस्कृति मंत्रालय के प्रमुख कार्यक्रम के अनुरूप इन कार्यशालाओं में सहयोग और सामूहिक कार्य के पहलू को रेखांकित किया गया है। नेशनल गैलरी ऑफ मॉडर्न आर्ट, नई दिल्ली ने 11 से 17 दिसंबर तक ओडिशा के भुवनेश्वर में कलिंग इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी और सिलिकॉन इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी के साथ सहयोग किया और चंडीगढ़ में 25 दिसंबर, 2021 से 2 जनवरी, 2022 तक चितकारा विश्वविद्यालय के साथ सहयोग किया गया।

कला कुंभ-आजादी का अमृत महोत्सव विविधता में एकता के सार को दर्शाता है, साथ ही प्रगतिशील भारत के 75 साल और इसके लोगों, संस्कृति और इसकी उपलब्धियों के गौरवशाली इतिहास को मनाने

के लिए भारत सरकार की पहल का विश्लेषण भी करता है।

भारत के संविधान में रचनात्मक दृष्टान्तों से भी प्रेरणा ली गई है जिसमें नंदलाल बोस और उनकी टीम द्वारा चित्रित कलात्मक तत्वों ने भारत की स्वदेशी कलाओं के कई अभ्यावेदन के साथ एक विशिष्ट अपील प्रदान की है।

एक भारत श्रेष्ठ भारत के सच्चे सार का उत्सव इन कार्यशालाओं में दिखाई दिया है जहां भारत के स्वतंत्रता आंदोलन के गुमनाम नायकों के वीरतापूर्ण जीवन और संघर्षों को चित्रित करते हुए हमारे देश की समृद्ध विविधता अपने सांस्कृतिक पहलुओं में देखी गई।